

8-महाकाल का प्रतिभाओं को आमंत्रण

अध्याय 1: सर्वोपरि उपलब्धि—प्रतिभा

सरल स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: मनुष्य को सृष्टि के समस्त प्राणियों में वरिष्ठता क्यों मिली है?

उत्तर: मनुष्य को उसकी शरीर-संरचना और मानसिक-मस्तिष्कीय विलक्षणता के कारण सृष्टि के समस्त प्राणियों में वरिष्ठता मिली है।

प्रश्न 2: प्रतिभा नामक दिव्य विभूति को कैसे अर्जित किया जा सकता है?

उत्तर: प्रतिभा को प्रयत्नपूर्वक अर्जित किया जाता है; यह रास्ते में कहीं पड़ी हुई नहीं मिलती। इसे पाने के लिए गोताखोरों और हीरा खोजने वालों जैसा प्रयास करना पड़ता है।

प्रश्न 3: लेखक के अनुसार, किन मामलों में मनुष्य अन्य प्राणियों से पीछे है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, मनुष्य गिलहरी की तरह पेड़ पर नहीं चढ़ सकता, बैल जितना भार नहीं उठा सकता, दौड़ने में खरगोश की बराबरी नहीं कर सकता, पक्षियों की तरह उड़ नहीं सकता और न ही मछलियों की तरह तैर सकता है।

प्रश्न 4: प्रतिभा को एक दैवी स्तर की चेतना क्यों कहा गया है?

उत्तर: प्रतिभा को एक दैवी स्तर की विद्युत चेतना कहा गया है क्योंकि यह मनुष्य के व्यक्तित्व और कर्तृत्व में असाधारण उत्कृष्टता भर देती है, जिसके आधार पर वह आश्चर्यजनक सफलताएँ प्राप्त करता है।

प्रश्न 5: प्रतिभाशाली लोगों की तुलना किससे की गई है?

उत्तर: प्रतिभाशाली लोगों की तुलना तारागणों के बीच चमकने वाले चन्द्रमा और उदीयमान सूर्य से की गई है, जो स्वयं प्रकाशित होते हैं और दूसरों को भी अपनी आभा से जगमगा देते हैं।

कठिन स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: परिष्कृत प्रतिभा के अभाव में अन्य उपलब्धियाँ जैसे शरीर बल, सम्पदा या शिक्षा कैसे हानिकारक हो सकती हैं?

उत्तर: परिष्कृत प्रतिभा के अभाव में, अन्य उपलब्धियों का दुरुपयोग हो सकता है। शरीर बल का उपयोग व्यक्ति को आततायी और अपराधी बना सकता है। सम्पदा का उपयोग विलास, दुर्व्यसन और अहंकार-प्रदर्शन में हो सकता है। इसी प्रकार, बड़ी हुई शिक्षा या चतुरता का उपयोग बड़े-बड़े प्रपञ्च रचने में किया जा सकता है, जो दूसरों के लिए संकट खड़ा करता है।

प्रश्न 2: लेखक ने पिछड़े हुए लोगों की दुर्दशा का मुख्य कारण क्या बताया है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, पिछड़े हुए लोगों की दुर्दशा का मुख्य कारण उनमें निजी समर्थता अर्थात् प्रतिभा का अभाव है। इसी अभाव के कारण उन पर विपन्नता, प्रतिगामिता और दुर्व्यसन हावी हो जाते हैं और वे समाज के लिए एक समस्या बनकर रह जाते हैं।

प्रश्न 3: आज का सुसज्जित संसार किसका परिणाम है और इसमें प्रतिभा की क्या भूमिका है?

उत्तर: आज का सुसज्जित, सुसंस्कृत और समुन्नत संसार अपने आप नहीं बना है। यह मनुष्य की प्रतिभा के विकसित होने के साथ-साथ ही अस्तित्व में आया है। सर्वतोमुखी प्रगति का मूल आधार परिष्कृत प्रतिभा ही है, जिसके बिना अस्तित्व एक जीवित लाश जैसा है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: "मनुष्य स्वयं ही अपना शत्रु और स्वयं ही अपना मित्र है," इस कथन का प्रतिभा परिष्कार के संदर्भ में क्या अर्थ है?

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि प्रतिभा का परिष्कार पूरी तरह से व्यक्ति के अपने पुरुषार्थ पर निर्भर करता है। अन्य सुविधाएँ तो दूसरों की कृपा से मिल सकती हैं, लेकिन प्रतिभा को निखारने के लिए अपना संकल्प, समय और पुरुषार्थ ही काम आता है। यदि व्यक्ति इस पुरुषार्थ में आलस्य करता है तो वह स्वयं का शत्रु बन जाता है, और यदि वह दृढ़ संकल्प से स्वयं को उठाता है तो वह अपना मित्र सिद्ध होता है।

प्रश्न 2: प्रतिभा को 'ओजस्', तेजस् और वर्चस्' का समन्वय क्यों कहा गया है?

उत्तर: प्रतिभा को 'ओजस्', तेजस् और वर्चस्' का समन्वय इसलिए कहा गया है क्योंकि यह व्यक्ति के संपूर्ण अस्तित्व को प्रभावित करती है। यह शरीर में ओजस्विता (जीवन शक्ति), मन में तेजस्विता (बौद्धिक प्रखरता) और अंतःकरण में वर्चस्विता (आध्यात्मिक आभा) के रूप में प्रकट होती है। यह दूरदर्शिता, साहसिकता और नीति-निष्ठा का समन्वित रूप है जो व्यक्ति को असाधारण बनाता है।

अध्याय 2: प्रतिभा से बढ़कर और कोई समर्थता है नहीं

सरल स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: प्रतिभा का गुलदस्ता किन चीजों से मिलकर बनता है?

उत्तर: आदर्शवादी प्रयोजन, सुनियोजन, व्यवस्था और साहसभरी पुरुषार्थ-परायणता को मिला दिया जाए तो उस गुलदस्ते का नाम प्रतिभा होता है।

प्रश्न 2: आतंक और प्रतिभा में क्या मूल अंतर है?

उत्तर: आतंक दूसरों पर हावी होकर उनसे कुछ भी करा लेने का दुस्साहस है, जबकि प्रतिभा उत्कृष्टता के साथ

जुड़ी साहसिकता का नाम है। आतंकवादी या अपराधी दैत्य कहलाते हैं, जबकि प्रतिभावान व्यक्ति अपने आसपास के वातावरण को चन्दन की तरह महकाते हैं।

प्रश्न 3: गांधीजी के व्यक्तित्व का उनके अनुयायियों पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर: गांधीजी के परामर्श एवं सान्निध्य से अनेक प्रतिभाएँ निखरीं और एकत्रित हुईं, जिन्होंने देश के वातावरण में शौर्य और साहस के प्राण फूँक दिए।

प्रश्न 4: अंगुलिमाल और अम्बपाली के जीवन में बुद्ध के सान्निध्य से क्या परिवर्तन आया?

उत्तर: महादस्यु अंगुलिमाल बुद्ध के सान्निध्य में आते ही पानी-पानी हो गया और दस्यु-कर्म छोड़कर उनका शिष्य बन गया। इसी प्रकार, वेश्या अम्बपाली भी बुद्ध के चरणों में गिरकर उनकी शिष्या बन गई और अपना शेष जीवन लोकमंगल के लिए समर्पित कर दिया।

प्रश्न 5: सरदार पटेल ने रियासतों के राजाओं को भारत में विलय के लिए कैसे प्रेरित किया?

उत्तर: जब कुछ राजा अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर रहे थे, तो सरदार पटेल ने कड़ककर कहा कि "इस तलवार से तो मेहतरों की झाड़ू अधिक सशक्त है, जो कुछ कर तो दिखाती है।" उनके इस आत्मविश्वास के आगे राजाओं को समर्पण करना पड़ा।

कठिन स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: लेखक के अनुसार, केवल साधनों या परिस्थितियों का होना सफलता की गारंटी क्यों नहीं है? उदाहरण सहित समझाएँ।

उत्तर: लेखक के अनुसार, सफलता के लिए साधनों से अधिक महत्वपूर्ण मनोबल और प्रतिभा है। चाणक्य ने बिना साधनों के मनोबल के आधार पर ही चन्द्रगुप्त को सम्राट बनाया। राणा प्रताप और शिवाजी ने भी बहुत कम साधनों से असाधारण लड़ाइयाँ जीतीं। इसके विपरीत, यदि किसी को पैतृक संपत्ति मिल भी जाए तो यह निश्चित नहीं है कि वह उसे सुरक्षित रख पाएगा, क्योंकि इसके लिए भी प्रतिभा की आवश्यकता होती है।

प्रश्न 2: इस अध्याय में वर्णित ऐतिहासिक और पौराणिक उदाहरण प्रतिभा की किस शक्ति को दर्शाते हैं?

उत्तर: इस अध्याय के उदाहरण, जैसे- गांधी, बुद्ध, चाणक्य, शिवाजी, लक्ष्मीबाई, और नेपोलियन, यह दर्शाते हैं कि प्रतिभा केवल व्यक्तिगत सफलता का माध्यम नहीं है, बल्कि यह जनमानस को प्रभावित करने, असम्भव को सम्भव बनाने और समाज में बड़े परिवर्तन लाने की क्षमता रखती है। प्रतिभा के बल पर विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बनाया जा सकता है।

प्रश्न 3: प्रतिभा को परिभाषित करने वाले मुख्य सद्गुण कौन-कौन से हैं?

उत्तर: प्रतिभा को परिभाषित करने वाले मुख्य सद्गुण हैं - कठोर श्रमशीलता, एकाग्रता, लक्ष्य के प्रति सघन

तत्परता, सूझ-बूझ और कठिनाइयों से उबरने की क्षमता। इन्हीं सद्गुणों का समुच्चय एक प्रभावशाली व्यक्तित्व का निर्माण करता है, जिसे प्रतिभा कहा जाता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: "प्रतिभा जहाँ भी होती है, वहाँ कस्तूरी की तरह महकती है और चन्दन की तरह समीपवर्ती वातावरण को प्रभावित करती है।" इस कथन की सार्थकता अध्याय में दिए गए उदाहरणों के माध्यम से सिद्ध करें।

उत्तर: यह कथन पूरी तरह सार्थक है। अध्याय में गांधीजी का उदाहरण है, जिनके सान्निध्य ने पूरे देश में शौर्य का संचार कर दिया। बुद्ध की प्रतिभा ने अंगुलिमाल जैसे दस्यु और अम्बपाली जैसी वेश्या को बदलकर संत बना दिया। नारद के थोड़े से संपर्क ने ध्रुव और प्रह्लाद को ऊँचाइयों तक पहुँचाया। ये सभी उदाहरण सिद्ध करते हैं कि सच्ची प्रतिभा की सुगंध दूर-दूर तक फैलती है और अपने संपर्क में आने वाले हर व्यक्ति और वातावरण को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

प्रश्न 2: प्रतिभा का अर्जन और उसका प्रभाव, क्या यह एक व्यक्तिगत यात्रा है या यह दूसरों के सहयोग पर भी निर्भर करती है? अध्याय के आधार पर विश्लेषण करें।

उत्तर: अध्याय के अनुसार, प्रतिभा का अर्जन एक व्यक्तिगत यात्रा है जिसके लिए अपने गुण, कर्म और स्वभाव को विकसित करने का निरंतर प्रयत्न करना पड़ता है। लेकिन, इसका प्रभाव सामूहिक होता है। एक प्रतिभाशाली व्यक्ति (जैसे गांधी, बुद्ध, चाणक्य, रामकृष्ण परमहंस) दूसरों में भी प्रतिभा जगा सकता है और उन्हें महान कार्यों के लिए प्रेरित कर सकता है। विवेकानन्द, दयानन्द, शिवाजी जैसे व्यक्तित्व मार्गदर्शकों के प्रभाव से ही निखरे थे। अतः प्रतिभा का विकास व्यक्तिगत पुरुषार्थ से होता है, पर इसका प्रस्फुटन और व्यापक प्रभाव अक्सर किसी अन्य प्रतिभा के सान्निध्य या प्रेरणा से होता है।

अध्याय 3: परिष्कृत प्रतिभा, एक दैवी अनुदान-वरदान

सरल स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: ईश्वर को कुशल मालियों, कलाकारों और शूरवीर सैनिकों की आवश्यकता क्यों पड़ रही है?

उत्तर: ईश्वर को अपनी दुनिया को समुन्नत, सुसंस्कृत और सुसम्पन्न बनाने के लिए कुशल मालियों, कलाकारों और शूरवीर सैनिकों की आवश्यकता पड़ रही है।

प्रश्न 2: हनुमान जी को असाधारण शक्तियाँ कैसे प्राप्त हुईं?

उत्तर: जब राम को सीता की खोज के लिए हनुमान की आवश्यकता पड़ी और हनुमान ने उनका अनुरोध स्वीकार किया, तो बदले में उन्हें समुद्र लांघने और पर्वत उठाने जैसी असाधारण शक्तियाँ प्राप्त हुईं, जो उनकी अपनी मौलिक क्षमता में नहीं थीं।

प्रश्न 3: भगवान ने सुदामा को अपनी द्वारिकापुरी क्यों दी?

उत्तर: भगवान ने सुदामा को अपनी द्वारिकापुरी इस विश्वास के साथ दी थी कि वे इस अनुदान का प्रयोग एक कारगर विश्वविद्यालय चलाने जैसे लोकमंगल के कार्य के लिए करेंगे।

प्रश्न 4: "परिष्कृत प्रतिभा" को दूसरा वरदान क्यों कहा गया है? पहला वरदान क्या है?

उत्तर: भगवान ने पहला वरदान काय-कलेवर (शरीर) के रूप में बिना मूल्य दिया है, और उसके बाद दूसरा बहुमूल्य वरदान "परिष्कृत प्रतिभा" है, जिसके सहारे कोई व्यक्ति महामानव के स्तर तक पहुँचता है।

प्रश्न 5: भगवान के बैंक में जमा की हुई पूँजी का क्या परिणाम होता है?

उत्तर: भगवान के बैंक में जमा की हुई पूँजी (पुण्य-परमार्थ) बहुत अधिक ब्याज समेत वापस लौटती है, जो किसी अन्य व्यवसाय में मिलने वाले लाभ से कहीं अधिक होती है।

कठिन स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: लेखक के अनुसार, दैवी अनुदान या ईश्वरीय सहायता प्राप्त करने की मुख्य शर्त क्या है?

उत्तर: दैवी अनुदान प्राप्त करने की मुख्य शर्त है **पात्रता सिद्ध करना**। व्यक्ति को यह सिद्ध करना होता है कि वह प्राप्त होने वाली शक्ति या अनुदान का उपयोग उच्चस्तरीय और लोकमंगल के प्रयोजनों में ही करेगा। जैसे अर्जुन को गाण्डीव देने से पहले यह जांचा गया था कि उसका उपयोग किस काम में होगा। मांगने वाले भिखमंगों को दुत्कार मिलती है, पर जो ईश्वर का काम करते हैं, उन्हें आदर सहित साधन दिए जाते हैं।

प्रश्न 2: "बोया जाए और उसके बाद काटा जाए" - इस नियम का प्रतिभा और दैवी अनुग्रह के संदर्भ में क्या महत्व है?

उत्तर: इस नियम का अर्थ है कि **पुरस्कार या दैवी अनुग्रह प्राप्त करने से पहले विशिष्ट पुरुषार्थ का परिचय देना आवश्यक है**। जैसे किसान पहले बीज बोता है और फिर फसल काटता है, उसी प्रकार व्यक्ति को पहले पुण्य-परमार्थ और सेवा-साधना जैसे कर्म करने पड़ते हैं। इसी पुरुषार्थ के आधार पर उसकी पात्रता सिद्ध होती है और उसे 'परिष्कृत प्रतिभा' जैसी बहुमूल्य सम्पदा प्राप्त होती है।

प्रश्न 3: युग परिवर्तन जैसे महान कार्य के लिए किस प्रकार के व्यक्तियों की आवश्यकता होती है?

उत्तर: युग परिवर्तन जैसे महान कार्य, जो आरम्भ में असम्भव लगते हैं, उन्हें पूरा करने के लिए **असाधारण, मनस्वी और संकल्पवान व्यक्तियों की आवश्यकता होती है**। ऐसे व्यक्ति चाहिए जो अपनी साहसिकता का परिचय दे सकें और जिन्हें दूसरे शब्दों में प्रतिभावान कहा जा सके। ये वो लोग होते हैं जो असम्भव को भी सम्भव बनाने का साहस रखते हैं, जैसे नेपोलियन, कोलम्बस और फरहाद।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: "इन दिनों गर्ज ईश्वर को पड़ी है।" इस कथन का नवयुग के अवतरण के संदर्भ में क्या तात्पर्य है?

उत्तर: इस कथन का तात्पर्य है कि वर्तमान समय में संसार में अनाचार, प्रदूषण और अन्य समस्याएँ इतनी बढ़ गई हैं कि स्वयं सृष्टि के नियंता (ईश्वर) को इस व्यवस्था को सुधारने की आवश्यकता महसूस हो रही है। इस नवसृजन या युग परिवर्तन के महान कार्य के लिए ईश्वर को कर्मवीर और प्रतिभावान सहयोगियों की "गर्ज" या आवश्यकता है। अतः, जो भी व्यक्ति इस ईश्वरीय पुकार पर आगे बढ़कर उनका सहयोगी बनेगा, उसे दैवी अनुग्रह और 'परिष्कृत प्रतिभा' का वरदान निश्चित रूप से प्राप्त होगा।

प्रश्न 2: क्या दैवी अनुदान बिना किसी शर्त के मिलता है? 'भस्मासुर' का उदाहरण देकर प्रतिभा और शक्ति के सदुपयोग की अनिवार्यता को स्पष्ट करें।

उत्तर: नहीं, दैवी अनुदान बिना शर्त के नहीं मिलता। इसे प्राप्त करने के लिए पात्रता सिद्ध करनी होती है। 'भस्मासुर' का उदाहरण यह स्पष्ट करता है कि यदि बिना जांच-पड़ताल और पात्रता के किसी को कोई बड़ी शक्ति या अनुदान दे दिया जाए, तो वह उसका दुरुपयोग कर सकता है। भस्मासुर ने शिव से मिले वरदान का उपयोग उन्हीं को भस्म करने के लिए किया। इसी प्रकार, यदि अपात्र व्यक्ति को प्रतिभा या शक्ति मिल जाए, तो वह समाज के लिए विनाशकारी सिद्ध हो सकता है। इसीलिए दैवी व्यवस्था पहले यह सुनिश्चित करती है कि अनुदान पाने वाला उसका सदुपयोग करेगा।

अध्याय 4: प्रचण्ड मनोबल की प्रतिभा में परिणति

सरल स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: "ईश्वर उन्हीं की सहायता करता है, जो अपनी सहायता आप करते हैं।" इस उक्ति का क्या अर्थ है?

उत्तर: इस उक्ति का अर्थ है कि जब व्यक्ति स्वयं पुरुषार्थ करता है और दृढ़ संकल्प के साथ किसी कार्य में जुट जाता है, तभी उसे दैवी या बाहरी सहायता प्राप्त होती है।

प्रश्न 2: चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को और कृष्ण ने अर्जुन को कैसे महान कार्यों के लिए प्रेरित किया?

उत्तर: चन्द्रगुप्त स्वयं को बड़े साम्राज्य के योग्य नहीं पा रहा था, पर चाणक्य ने उसमें प्राण फूँके और उसे अपने आदेशानुसार चलने के लिए विवश किया। इसी प्रकार, अर्जुन महाभारत के युद्ध से सकपका रहा था, पर कृष्ण ने उसे युद्ध करने के लिए प्रेरित और बाधित किया।

प्रश्न 3: प्रतिभा को परिष्कृत करने के लिए किस प्रकार के अभ्यास की आवश्यकता होती है?

उत्तर: जैसे पहलवान को कुश्ती के लिए अखाड़े में अभ्यास करना पड़ता है, उसी प्रकार प्रतिभा को परिष्कृत करने के लिए निरंतर अवांछनीयताओं से जूझना और सुसंस्कारी आदर्शवादिता को बढ़ाने का प्रयास करना पड़ता है। इसके लिए आत्मनिरीक्षण, आत्मसुधार और आत्मविकास आवश्यक है।

प्रश्न 4: पात्रता विकसित करने की तुलना किससे की गई है?

उत्तर: पात्रता विकसित करने की तुलना वर्षा के जल को इकट्ठा करने वाले बर्तन के आकार या गड्ढे की गहराई से की गई है। वर्षा चाहे कितनी भी हो, पल्ले उतना ही पड़ता है जितना बड़ा बर्तन होता है। इसी तरह, दैवी कृपा प्राप्त करने के लिए पहले अपनी पात्रता बढ़ानी पड़ती है।

प्रश्न 5: प्रतिभा को शरीर में किस ज्वलनशील तेल की तरह बताया गया है?

उत्तर: प्रतिभा को उस ज्वलनशील तेल की तरह बताया गया है जिसके बल पर बसों और मोटरों का ढाँचा सड़क पर दौड़ता है। जैसे तेल खत्म होने पर गाड़ी रुक जाती है, वैसे ही प्रतिभा के बिना मनुष्य का शरीर भी चमत्कारी काम नहीं कर सकता।

कठिन स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: प्रतिभा का हस्तांतरण कैसे संभव है? अध्याय से उदाहरण देकर समझाएँ।

उत्तर: प्रतिभा का हस्तांतरण एक समर्थ मार्गदर्शक द्वारा अपने आवेश को किसी शिष्य या अनुयायी पर डालकर संभव है। जैसे रामकृष्ण परमहंस ने अपनी प्रतिभा का आवेश हस्तांतरित कर साधारण विद्यार्थी नरेन्द्र को विश्वविख्यात विवेकानन्द बना दिया। इसी प्रकार, समर्थ गुरु रामदास की मनस्विता ने शिवाजी को पराक्रमी बनाया और विरजानन्द के प्रोत्साहन ने दयानन्द को प्रगतिशील बनाया।

प्रश्न 2: आत्म-परिष्कार की प्रक्रिया में निजी जीवन और परिवार की क्या भूमिका है?

उत्तर: प्रतिभा-परिष्कार के लिए सबसे अच्छा क्षेत्र निजी जीवन और परिवार ही है। व्यक्ति को अपने गुण, कर्म और स्वभाव में आने वाली मलीनताओं को रोज दूर करना होता है। इसके लिए आत्म-निरीक्षण और आत्म-सुधार का निरंतर अभ्यास करना पड़ता है। साथ ही, परिवार के सदस्यों में श्रमशीलता, शिष्टता और सहकारिता जैसी प्रवृत्तियों को विकसित करने के लिए भी प्रयास करना पड़ता है, जिससे व्यक्ति की अपनी योग्यता और क्षमता भी बढ़ती है।

प्रश्न 3: लेखक ने मनोबल की शक्ति को दर्शाने के लिए सैंडो और चंदगीराम पहलवान का उदाहरण क्यों दिया है?

उत्तर: लेखक ने इन दोनों पहलवानों का उदाहरण यह दर्शाने के लिए दिया है कि प्रचंड मनोबल के सहारे शारीरिक दुर्बलता और विपरीत परिस्थितियों पर भी विजय पाई जा सकती है। सैंडो किशोर अवस्था में बीमार और दुर्बल थे, पर मनोबल से विश्वविजयी पहलवान बने। इसी तरह, चंदगीराम पहलवान भी एक क्षीणकाय अध्यापक थे, लेकिन उन्होंने अपनी नई रीति-नीति और मनोबल से 'हिन्दू केसरी' की उपाधि प्राप्त की। यह सिद्ध करता है कि प्रतिभा का मूल स्रोत मनोबल है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: "प्रतिभा वस्तुतः वह सम्पदा है, जो व्यक्ति की मनस्विता, ओजस्विता, तेजस्विता के रूप में बहिरंग में प्रकट होती है।" इस कथन का विश्लेषण कैंसर पीड़ित महिला के उदाहरण से करें।

उत्तर: यह कथन पूरी तरह से सत्य है। जब इंग्लैंड की कैंसर पीड़ित महिला को डॉक्टरों ने जवाब दे दिया, तो उसकी आंतरिक चेतना या मनस्विता जागी। उसने मरने की चिंता छोड़कर दूसरों को बचाने का संकल्प लिया। इस संकल्प ने उसकी ओजस्विता (जीवन शक्ति) और तेजस्विता (कार्य करने की ऊर्जा) को इतना बढ़ा दिया कि वह न केवल एक बड़ा अस्पताल बनाने में सफल हुई, बल्कि इस प्रक्रिया में उसका अपना कैंसर भी ठीक हो गया। यह उदाहरण सिद्ध करता है कि जब आंतरिक प्रतिभा जागृत होती है, तो वह बाहरी परिस्थितियों और यहाँ तक कि असाध्य रोगों को भी परास्त कर सकती है।

प्रश्न 2: इस अध्याय का केंद्रीय विचार क्या है? यह कैसे सिद्ध करता है कि 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत'?

उत्तर: इस अध्याय का केंद्रीय विचार यह है कि प्रचंड मनोबल ही प्रतिभा का मूल स्रोत है और इसके जागरण से असम्भव को भी संभव बनाया जा सकता है। कालिदास और वरदराज जैसे मंदबुद्धि व्यक्ति मनोबल के सहारे ही मूर्धन्य विद्वान बने। कैंसर पीड़ित महिला मौत पर विजय पा सकी। ये सभी उदाहरण 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत' की उक्ति को चरितार्थ करते हैं। जब तक व्यक्ति मन से हार नहीं मानता और अपनी आंतरिक शक्ति को जगाने का प्रयास करता है, तब तक कोई भी अभाव या बाधा उसे रोक नहीं सकती। उसकी अंतःचेतना ही उसकी सबसे बड़ी शक्ति है।

अध्याय 5: आगे बढ़ें और लक्ष्य तक पहुँचें

सरल स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: प्रतिभा को अध्यात्म की भाषा में क्या कहते हैं?

उत्तर: प्रतिभा को अध्यात्म की भाषा में प्राणाग्नि एवं तेजस्वी मानसिकता कहते हैं।

प्रश्न 2: प्रतिभा के अभाव वाले व्यक्ति की क्या पहचान है?

उत्तर: जिसमें प्रतिभा का अभाव होता है, उसे कायर, अकर्मण्य, डरपोक, आलसी माना जाता है और वह आत्महीनता की ग्रंथियों से ग्रसित रहता है।

प्रश्न 3: व्यक्तित्व का परिष्कार क्या है?

उत्तर: व्यक्तित्व का परिष्कार ही प्रतिभा परिष्कार है।

प्रश्न 4: गीताकार ने मनुष्य को क्या करने के लिए प्रोत्साहित किया है?

उत्तर: गीताकार ने मनुष्य को प्रोत्साहित करते हुए कहा है कि "मनुष्य स्वयं ही अपना शत्रु और स्वयं ही अपना मित्र है। इसलिए अपने को उठाओ, गिराओ मत"।

प्रश्न 5: मनुष्य के अंदर विद्यमान प्रतिभा को कैसे प्रकट किया जा सकता है?

उत्तर: प्रबल इच्छा शक्ति एवं उत्कंठा के बल पर मनुष्य अपने अंदर विद्यमान सशक्त प्रतिभा को बिना किसी का अहसान लिए प्रकट कर सकता है।

कठिन स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: "व्यक्तित्ववान अनेकों का स्नेह, सहयोग, परामर्श एवं उपयोगी सान्निध्य प्राप्त करते चले जाते हैं।" यह कैसे संभव होता है?

उत्तर: यह चुम्बकीय आकर्षण के सिद्धांत की तरह संभव होता है। जैसे धातु के कण अपनी खदान की ओर आकर्षित होते हैं, उसी प्रकार एक परिष्कृत और प्रभावशाली व्यक्तित्व अपने आप ही दूसरों के स्नेह, सहयोग और सान्निध्य को अपनी ओर खींचता है। यह व्यक्ति का निजी पुरुषार्थ होता है जो उसे इस योग्य बनाता है कि दूसरे लोग उसकी सहायता के लिए स्वयं आगे आएँ।

प्रश्न 2: लेखक ने स्वाध्याय और सत्संग को क्यों महत्वपूर्ण बताया है, विशेषकर आज के समय में?

उत्तर: लेखक ने स्वाध्याय और सत्संग को इसलिए महत्वपूर्ण बताया है क्योंकि आज के समय में व्यक्ति और समाज में हीनता और निकृष्टता का बाहुल्य है। ऐसे नकारात्मक वातावरण से बचने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति पुस्तकों के माध्यम से महान व्यक्तियों के जीवन प्रसंगों को पढ़े और उनके संस्मरणों को आत्मसात करे। इससे उसे सकारात्मक प्रेरणा मिलती है और वह ऐसा अनुभव करता है मानो देवलोक में विचरण कर रहा हो।

प्रश्न 3: संकल्प-शक्ति की क्या विशेषताएँ बताई गई हैं?

उत्तर: संकल्प-शक्ति के बारे में कहा गया है कि यह चट्टान को भी चटका सकती है और कठोर को भी नरम बना देती है। यह उन साधनों को भी अपनी ओर खींच लाती है जिनकी व्यक्ति को आवश्यकता होती है। यह इतनी समर्थ है कि रस्सी को साँप और साँप को रस्सी बना सकती है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: मनुष्य की क्षमता की तुलना देवताओं और दानवों दोनों से क्यों की गई है? इससे मनुष्य की जिम्मेदारी का क्या बोध होता है?

उत्तर: मनुष्य की क्षमता की तुलना दोनों से इसलिए की गई है क्योंकि उसके भीतर दोनों बनने की प्रबल संभावना है। जब वह अपनी प्रतिभा का उपयोग धिनौने कार्यों में करता है, तो वह प्रेत-पिशाचों से भी भयंकर

बन जाता है। वहीं, जब वह अपनी श्रेष्ठता को उभारता है, तो देवता भी उसे नमन करते हैं। इससे मनुष्य की यह महान जिम्मेदारी बनती है कि वह अपनी असीम क्षमता का उपयोग सृजन और श्रेष्ठता के लिए करे, न कि विनाश के लिए। भगवान भी बार-बार मनुष्य के रूप में ही अवतार लेते हैं, जो उसकी महानता को दर्शाता है।

प्रश्न 2: "यह पारस से सटने का समय है, कल्पवृक्ष की छाया में बैठ सकने का अवसर है।" इस कथन का वर्तमान समय के संदर्भ में क्या गहरा अर्थ है?

उत्तर: इस कथन का गहरा अर्थ यह है कि वर्तमान समय नव-सृजन और उज्ज्वल भविष्य के निर्माण का एक असाधारण अवसर है। स्वयं सृष्टि की नियंता शक्ति इस महान परिवर्तन के लिए कार्य कर रही है। ऐसे में, जो कोई भी इस सृजन अभियान में सहभागी बनेगा, उसका व्यक्तित्व भी पारस के स्पर्श से सोने की तरह निखर जाएगा। यह एक ऐसा सुनहरा अवसर है जब व्यक्ति थोड़े से प्रयास से ही 'परिष्कृत प्रतिभा' का महान लाभ प्राप्त कर सकता है, ठीक उसी तरह जैसे कल्पवृक्ष के नीचे बैठकर कोई भी मनोकामना पूरी की जा सकती है। यह समय व्यक्तिगत उन्नति को विश्व-कल्याण के साथ जोड़ने का एक अनूठा सुयोग है।

- **प्रतिभा** - यह एक दिव्य विभूति है जिसे प्रयत्नपूर्वक अर्जित किया जाता है। यह एक दैवी स्तर की विद्युत चेतना है, जो मनुष्य के व्यक्तित्व और कर्तृत्व में असाधारण स्तर की उत्कृष्टता भर देती है। यह शरीर में ओजस्विता, मन में तेजस्विता और अंतःकरण में वर्चस्विता के रूप में दिखाई देती है। इसे दूरदर्शिता, साहसिकता और नीति-निष्ठा का समन्वय भी कहा गया है। आदर्शवादी प्रयोजन, सुनियोजन, व्यवस्था और साहसभरी पुरुषार्थ-परायणता को मिला दिया जाए, तो उस गुलदस्ते का नाम प्रतिभा है। यह उत्कृष्टता के साथ जुड़ी साहसिकता का नाम है। अध्यात्म की भाषा में इसे प्राणाग्नि एवं तेजस्वी मानसिकता कहते हैं। व्यक्ति की अंतःचेतना, जो उसे अभावों और व्यवधानों को रौंदकर उन्नति के शिखर तक पहुँचाती है, उसे भी प्रतिभा कहते हैं।
- **परिष्कृत प्रतिभा** - यह एक दैवी अनुदान-वरदान है, जिसे प्राप्त करने के लिए पात्रता सिद्ध करनी पड़ती है। यह वह सम्पदा है जिसकी तुलना में मनुष्य को गौरवान्वित करने वाला और कोई साधन नहीं है।
- **प्रतिभा परिष्कार** - व्यक्तित्व का परिष्कार ही प्रतिभा परिष्कार है।
- **प्रतिभाशाली लोग** - ये वे लोग होते हैं जो तारागणों के बीच चन्द्रमा की तरह चमकते हैं या उदीयमान सूर्य की तरह होते हैं, जो स्वयं प्रकाशित होकर दूसरों को भी ऊर्जा और आभा देते हैं। इन्हें असाधारण, विशिष्ट और वरिष्ठ भी कहा जाता है।
- **ओजस्, तेजस् और वर्चस्** - ये प्रतिभा के ही नाम हैं।
- **सजीव शक्ति वर्षा** - प्रतिभा को अपने, दूसरों, संसार और वातावरण को प्रभावित करने वाली सजीव शक्ति वर्षा भी कह सकते हैं।
- **आतंक** - यह दूसरों पर हावी होकर उनसे कुछ भी भला-बुरा करा लेने का दुस्साहस है।
- **व्यक्तित्व का परिष्कार** - प्रतिभा का परिष्कार ही व्यक्तित्व का परिष्कार है।
- **व्यक्तित्ववान (व्यक्ति)** - यह वह व्यक्ति होता है जो अनेकों का स्नेह, सहयोग, परामर्श एवं उपयोगी सान्निध्य प्राप्त करता चला जाता है।
- **प्रतिभारहित समुदाय** - इनका धरती पर लदे भार जैसा आकलन होता है, जो स्वयं अर्धमृतक की तरह दूसरों के सहारे की अपेक्षा करते हैं।
- **साहसिकता** - यह प्रतिभा का ही एक नाम है।
- **दूरदर्शिता और विवेकशीलता** - इन्हें प्रतिभा के रूप में ही जाना जा सकता है।
- **प्राणाग्नि एवं तेजस्वी मानसिकता** - अध्यात्म की भाषा में प्रतिभा को प्राणाग्नि एवं तेजस्वी मानसिकता कहते हैं।